पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

कबुई आदिवासी समाज में लोक-संस्कृति का स्वरूप

रोज़ी कामेई

आज आदिवासी विमर्श ने साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित तो कर लिया है, परन्तु उसमें पूर्वोत्तर के आदिवासी समाज का विमर्श अभी न के बराबर ही है। इसी विमर्श के बीच धीरे-धीरे आज पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी समाज कुछ हद तक अपनी पहचान बनाने में सफल हो रहे हैं।

पूर्वोत्तर भारत आदिवासी-बहुल क्षेत्र है, जहाँ सदियों से आदिवासी समुदायों का आपसी सह-अस्तित्व रहा है। प्रत्येक आदिवासी समुदाय की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराएँ और धार्मिक मान्यताएँ हैं। ये परम्परा और संस्कृति इन्हें देश के अन्य आदिवासी समुदायों से अलग करती हैं। इन आदिवासी समाजों में धर्म, विश्वास और प्रथाएँ जीवन के सभी पहलुओं को नियंत्रित करते हैं। इस आलेख के माध्यम से हम देखेंगे कि कबुई समाज अपनी लोक-संस्कृति यानी धार्मिक विश्वास, आस्थाओं, त्योहार, प्राकृतिक घटनाओं, देवी-देवताओं आदि से दैनंदिन जीवन में किस प्रकार जुड़ा हुआ है।

जाहिर है, मणिपुर में भी बहुत सारे आदिवासी समुदाय एक साथ निवास करते हैं। कबुई उन आदिवासी समुदायों में से एक है, जो मुख्यतः मणिपुर में निवास करता है। यह समुदाय मणिपुर के तमेंगलोंग और खौपुम जिलों के अलावा राजधानी इम्फाल के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों तथा नागालैण्ड व असम के कुछ छोटे-बड़े इलाकों में फैला हुआ है। यह समाज कबीलाई प्रणाली और वंश-परम्परा पर आधारित है। ये एक निश्चित स्थान पर समूह में रहते हैं, जहाँ इनके अपने नियम-कानून निश्चित होते हैं। कबुई समाज भेदभाव और जाति-व्यवस्था से दूर है। यह एक वर्गहीन समाज है, जहाँ सभी लोग व्यवस्थित जीवन जीते हैं।

कबुई को 'रोंगमई' के नाम से भी जाना जाता है। 15 फरवरी, 1947 को इम्फाल के कईसाम्थोंग नामक स्थान पर जेमे, लियांग्मई और रोंगमई

समुदायों के बैठक के बाद तीनों समुदायों के नाम के आधार पर एक संस्था का गठन किया गया, जिसका नाम 'जेलियांगरोंग' (ze-liang-rong) रखा गया।

इस संगठन का मूल उद्देश्य तीनों समुदायों की संस्कृति को बनाए रखना था। इसके साथ-साथ जेलियांगरोंग के लोगों के बीच अर्थव्यवस्था का विकास, संस्कृति को बढ़ावा देने, शिक्षा का प्रसार एवं एकता का प्रचार करने हेतु भी यह संगठन था। जिस कबुई आदिवासी समुदाय ने रानी गाइदिन्ल्यु और जादोनंग जैसे महान क्रांतिकारियों को जन्म दिया, आज उसी मणिपुर के आदिवासी समुदाय कबुई समाज और में लोक संस्कृति के स्वरूप को व्यापक फलक पर लाने की भी आवश्यकता है।

कबुई समाज एक 'पितृसत्तात्मक समाज' है, जिसमें पुरुषों को ही सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। इस समाज में 'पई' (ग्राम पंचायत) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज में 'पई' को 'सुप्रीम कोर्ट' की मान्यता प्राप्त है। आपसी लड़ाई-झगड़ों एवं जमीन आदि से सम्बंधित झगड़ों में 'पई' आज भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस समाज में तीन प्रकार के परिवार देखने को मिलते हैं-

1. संयुक्त परिवार जिसे कउहकाई (kouhkai) कहा जाता है।

2. एकल परिवार जिसे बोमहकाई (bomhkai) कहते हैं।

3. इसके अलावा माइपुईकाई (maipuikai) भी होता है जिसे 'विडो फैमिली' कहते हैं।

माइपुई का अर्थ 'विधवा' और काई का अर्थ 'घर' होता है, जिसका मतलब होता है 'विधवा का घर'। परिवार में सबसे छोटे बेटे को ही सारी संपत्ति मिलती है। यदि परिवार में लड़का न हो और सिर्फ लड़कियाँ हों तो किसी एक दामाद को उसकी मर्ज़ी के अनुसार घर-जमाई बनाकर उसे ही सारी संपत्ति सौंप दी जाती है। यदि ऐसा नहीं होता तो उस विधवा की मृत्यु के पश्चात् उसके रिश्तेदार को उसकी सारी संपत्ति सौंप दी जाती है।

पितृसत्तात्मक समाज होने के बावज़ूद कबुई समाज में महिलाओं की स्थिति कुछ हद तक मज़बूत दिखाई देती है। महिलाओं को उनकी पसंद के अनुसार विवाह, तलाक और पति-चयन इत्यादि की स्वतन्त्रता है। वे परिवार की अर्थव्यवस्था को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, हालांकि समाज में महिलाओं की स्थिति मज़बूत होते हुए भी उन पर कुछ धार्मिक कार्यों के संदर्भ में प्रतिबन्ध भी लगाए जाते रहे हैं। कबुई समुदाय ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है। उनके पास अपना धर्म है, जो 'तिंगकाओ रागवोंग चापरेक' कहलाता है। इसका अर्थ है 'देवताओं के राजा, जो आकाश में रहते हैं'। इस समुदाय के अनुसार 'तिंगकाओ रागवोंग' ही सर्वोच्च हैं। वे ही ब्रह्माण्ड के निर्माता हैं। बहुत लम्बे बालों की वजह से तिंगकाओ रागवोंग को 'समतिंगफेनपु' (लम्बे बालों वाले) (samtingphenpu) के नाम से भी जाना जाता है। 'तिंगकाओ रागवोंग' एक प्राचीन धर्म का रूप है। यह मणिपुर के बाकी हिस्सों के धर्मों से अलग धर्म है। कबुई समाज इस बात पर दृढ़ता से विश्वास

करता है कि धर्म मन की स्थिति है, जिसे दुःख, दर्द, सुख, प्रेम और भावनात्मक स्वरूपों के साथ निभाया जाता है। कई मायनों में यह धर्म जीवन और आध्यात्मिक संतोष दोनों की ज़रूरतों को प्रदान या पूरा करता है। यह मृत्यु से पहले और बाद में अलौकिक शक्तियों में विश्वास की एक प्रणाली है। तिंगकाओ रागवोंग धर्म का सिद्धांत देवी-देवताओं, धार्मिक आचार्यों के मानदंडों के साथ सन्निहित है। इसके साथ कबुई समुदाय में कई देवी-देवताओं को भी पूजा जाता है। कबुई धर्म की मान्यताओं के अनुसार तिंगकाओ रागवोंग के सात भाई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-

1. फुबोनरा
2. नपसिनमई
3. करंगगुओंग
4. च्वोनचाई
5. चराकिलुआंगमई
6. दिमई-ग्वोंग

इनके अलावा प्रकृति संबंधी देवता भी हैं, जैसे- पोन ग्वोंग (वायु देवता), माई ग्वोंग (अग्नि देवता), दुई ग्वोंग (जल देवता) और दिमई ग्वोंग (पृथ्वी देवता) आदि।

इस समाज की अपनी कई अवधारणाएं भी हैं, जो इस प्रकार हैं-

आत्मा की अवधारणा :

यह समाज मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद की अलौकिक शक्तियों में विश्वास करता है। अलौकिक शक्तियों को आत्मा और ईश्वर के रूप में देखा जाता है। जीवन है और मृत्यु के बाद आत्मा है। शरीर में आत्मा का अस्तित्व ही जीवन का गठन करता है। आत्मा का अस्तित्व ही जीवन को महसूस करने, सीखने और सोचने में सक्षम बनाता है। इन्हीं अदृश्य तत्वों और बलों को ही ईश्वर का रूप माना जाता है।

मृतकों की भूमि की अवधारणा :

मृतकों की भूमि को 'तरोईरम' कहा जाता है। इस अवधारणा के अंतर्गत पृथ्वी की आँत के भीतर एक ऐसी भूमि है, जिसे 'तरोईरम' कहा जाता है। वहाँ मात्र मृतक निवास करते हैं। कोई नहीं जानता कि तरोईरम कहाँ है। मृत्यु के बाद सबसे पहले आत्मा इसी भूमि पर जायेगी और इस भूमि की देखभाल करने वाले 'तरोईग्वांग' की देखभाल में मृतक वहाँ निवास करेगा।

पुनर्जन्म की अवधारणा :

यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन-काल के दौरान अच्छे कर्म करता है तो उसकी आत्मा का पुनर्जन्म होगा; क्योंकि तिंगकाओ रागवोंग पुनर्जन्म की अवधारणा में मजबूती के साथ विश्वास रखते हैं। उनका यह मानना है कि यदि मनुष्य इस संसार में अच्छा काम करता है तो जन्म के बाद उसका पुनर्जन्म ज़रूर होगा। इस सम्बन्ध में एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसके परिवार के सदस्य उसके मृत शरीर पर लकड़ी के कोयले से निशान लगा देते हैं

उसकी आत्मा की पहचान के लिए। कुछ वर्षों बाद या अगली पीढ़ी में किसी व्यक्ति का जन्म इसी तरह के निशान के साथ होता है तो यह पुष्टि की जाती है कि परिवार का पुराना सदस्य अपने घर वापस लौट आया है।

स्वर्ग की अवधारणा :

स्वर्ग को 'तिंगकाओ कंदी' (आकाश की भूमि) कहते हैं। कबुई समाज स्वर्ग की अवधारणा पर बहुत विश्वास करते हैं जहाँ तिंगकाओ रागवोंग रहते हैं। इस स्थान तक पहुँचना मनुष्य का अंतिम लक्ष्य होता है। वहाँ दुःख और पीड़ा के लिए कोई स्थान नहीं होता। वहाँ जीवन हमेशा शान्ति और आनंद में बीतता है। इस स्थान तक पहुँचने के लिए मनुष्य को अच्छे कर्म करने की आवश्यकता होती है।

नर्क की अवधारणा :

कबुई समाज में नर्क की कोई स्पष्ट अवधारणा नहीं है। हालांकि मान्यता यही है कि एक पापी व्यक्ति 'थनदिजांग' नामक स्थान में रहने के लिए जाएगा, जहाँ कोई रोशनी नहीं है। वहाँ आत्मा मच्छरों और कीड़ों के काटने से परेशान होकर अपना जीवन व्यतीत करेगा। भूख और प्यास से तड़प कर यही सोचेगा कि उसने अपने जीवन-काल में बुरे कर्म ही क्यों किए !

धार्मिक आचार्यों की अवधारणा :

इस समाज में धार्मिक आचार्यों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि ये ही किसी भी चीज़ का रहस्योद्घाटन या सूचना को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। ये एक तरह से तिंगकाओ रागवोंग के सन्देशवाहक होते हैं या ये ही तिंगकाओ रागवोंग की अभिव्यक्ति के वाहक हैं।

पाप की अवधारणा :

कबुई समाज में पाप को 'नुआन' कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि समाज में धार्मिक और सामाजिक मानदंडों को तोड़ने वाला व्यक्ति पाप की श्रेणी में आता है। समाज में पाप यानी 'नुआन' के सन्दर्भ में दो अवधारणाएँ बनी हुई हैं। नुआन को 'मईनुआन' एवं 'राहनुआन' दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है।'मईनुआन' अर्थात् व्यक्ति का पाप, एवं 'राहनुआन' यानी ईश्वर का पाप। जो सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करेगा वह 'मईनुआन' के अंतर्गत आएगा। जो व्यक्ति धार्मिक मानदंडों का उल्लंघन करेगा वह 'राहनुआन' के अंतर्गत आएगा और समाज यह मानता है कि दोनों मानदंड तिंगकाओ रागवोंग के द्वारा दिए गए हैं।

इस प्रकार 'तिंगकाओ रागवोंग' धर्म के अंतर्गत पाप, स्वर्ग, आत्मा, मृतकों की भूमि इत्यादि की अवधारणाएँ बहुत ही मजबूती के साथ जुड़ी दिखाई देती हैं। इस तरह से कबुई समाज में ईश्वर, धर्म, आस्था का स्वरूप बंटा है, हालांकि पिछले दशकों से कबुई समाज में भी धर्म, आस्था व आड़म्बर के नए रूप भी देखने को मिल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त कबुई समुदाय के लोग एक प्रकार की भविष्यवाणी में भी विश्वास करते हैं। 'मंगकईमई' अर्थात् 'सपने में जानना' की प्रक्रिया

समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी प्रक्रिया को ही भविष्यवाणी कहते हैं। इस प्रक्रिया के तहत जब किसी परिवार का कोई सदस्य या पूरा परिवार किसी बीमारी से जूझ रहा हो या आर्थिक तंगी की स्थिति से जूझ रहा हो तो 'मुह' या 'माइपा' (पुजारी) की मदद से उन समस्याओं के कारणों को जानने का प्रयास किया जाता है। मुह (पुजारी) का हर समस्या को हल करने का अपना एक तरीका होता है। आमतौर पर मुह (पुजारी) देवताओं को अंडे, अदरक, मछली, फलों और अन्य घरेलू पशुओं की पेशकश करते हैं और सपने में उत्तर की तलाश करते हैं। उनके सपने में जो भी दिखाया गया या प्रकट किया गया हो वही परिवार की समस्या का हल है। उसके उपरान्त पुजारी धार्मिक अनुष्ठान करता है। इसी प्रकार मुह (पुजारी) देवता और लोगों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। इस महान भूमिका के लिए सामाजिक-धार्मिक जीवन में मुह (पुजारी) का समाज में बहुत सम्मान किया जाता है।

इसके साथ-साथ कबुई समाज बुरी आत्माओं, (chagamei) शैतान के अस्तित्व में भी विश्वास करता है। यह शैतान विभिन्न तरीकों से लोगों को कष्ट पहुँचाने का काम करता है। जैसे पेट-दर्द, सिर-दर्द, बेसुध हो जाना इत्यादि। मान्यता है कि शैतान भेष बदलकर सूअर और चूहे के रूप में रहता है। जिस सूअर का रूप शैतान ने धारण किया होता है उसका मुँह लाल होता है। शैतान उस शरीर को सोते समय ही छोड़ता है।

प्रकृति-पूजक कबुई समाज में भी विविध परिस्थितियों को त्योहार के रूप में खुशी से मनाने की परम्परा है। हर परिस्थिति से सम्बन्धित कुछ न कुछ त्यौहार ज़रूर है। कबुई समाज अपने त्योहारों के माध्यम से अनेक विचारधाराओं को प्रदर्शित भी करते हैं। कुछ प्रमुख त्योहारों के नाम इस प्रकार हैं-

1. नानु न्गाई (nanu ngai): बच्चों के कान छेदन का त्योहार
2. नपकाओमई (गिन्की) (napkaomei ngai): बीज बोने का त्योहार
3. गुदुई (gudui): बीज बोने के समापन का त्योहार
4. तुन न्गाई (tun ngai): बारिश का त्योहार
5. तेन न्गाई (ten ngai): रोटी का त्योहार
6. पोकफट न्गाई (pokphat ngai): नई फसलों का त्योहार
7. चकान न्गाई (chakan ngai): आत्माओं के प्रस्थान का त्योहार
8. दोनजाओ न्गाई (donjao ngai): धान के सबसे बड़े उत्पादक की घोषणा का त्योहार
9. गान न्गाई (gaan-ngai): फसल की कटाई का त्योहार
10. रिह न्गाई (rih ngai): युद्ध का त्योहार

आज आधुनिक समाज-प्रणाली के प्रभाव से कबुई समाज भी अछूता नहीं रहा है। आधुनिक समाज-प्रणाली से कबुई समाज की परम्परागत जीवन-शैली में बहुत बदलाव आया है। इनके पास अपने खुद का समृद्ध इतिहास है, जो लोक कथाओं, किंवदन्तियों और गीतों के रूप में अभिव्यक्त है। इसके साथ-साथ समृद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत भी इनके पास हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत के संबंध में भूत-प्रेतों की दुनिया तथा उनके साथ मनुष्यों के संबंधों के विषय में सम्मोहन, वशीकरण, ताबीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु के संबंध में अनेक परम्पराएँ भी इस समाज में विशिष्ट रूप से पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त विवाह, बाल तथा प्रौढ़ जीवन के रीति-रिवाज़, अनुष्ठान और त्योहार, पशु-पालन आदि विधि-विधान भी समाज में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं। इनकी अपनी आस्थाएं, परम्पराएँ तथा संस्कृति समाज को विशिष्ट और समृद्ध बना देती हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि निश्चित रूप से 'कबुई समाज' में लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

संपर्क सूत्र:
हिंदी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली